हम प्रदूषण से मुक्ति भी पाएं और खेतों में फसलों के बाद का जो अवशेष है, उसका भी उपयोग हो सके, ऐसा मेरा निवेदन है, धन्यवाद।

श्री अजय संचेती (महाराष्ट्र)ः महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री रणविजय सिंह जूदेव (छत्तीसगढ़)ः महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री शंकरभाई एन. वेगड़ (गुजरात)ः महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Rewati Raman Singh.

Concern over problems faced by the Central University of Allahabad

श्री रेवती रमन सिंह (उत्तर प्रदेश) ः माननीय चेयरमैन साहब, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी देश की प्रीमियर यूनिवर्सिटियों में से थी और उसको एक समय में Oxford of East कहा जाता था। वह इसलिए कहा जाता था, क्योंकि आईएएस, आईपीएस यानी सिविल सर्विसेज़ में सबसे ज्यादा लड़के इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के आते थे। हमारे समय में, 1963 में मेरिट लिस्ट में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के तीन लड़के थे। जब से इलाहाबाद यूनिवर्सिटी सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी हुई है, दुर्भाग्यवश उसकी हालत निरंतर खराब होती जा रही है और आज उसकी ऐसी स्थिति है कि एचआरडी मिनिस्ट्री के कहने पर यूजीसी ने एक कमेटी बनाई थी, जिसमें देश के शिक्षा क्षेत्र के प्रमुख एवं प्रसिद्ध लोग थे। उन्होंने 15, 16 एवं 17 नवंबर को इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में रुक कर उसका अध्ययन किया और उन्होंने इससे संबंधित एक रिपोर्ट एचआरडी मिनिस्ट्री को सौंपी है, जिसमें यह कहा गया है कि वहां के वाइस-चांसलर काम करना चाहते हैं और उन्होंने काम भी किया है, लेकिन वहां पर group of retired teachers, vested interest से प्रेरित होकर उनको काम नहीं करने दे रहे हैं और वहां लिटिगेशन बहुत ज्यादा हो गया है। 300 लिटिगेशन्स हैं, जो कि वहां के statues और ordinances गलत तरीके से बनाने के कारण हुआ है। उससे वहां की पूरी financial स्थिति drain out हो रही है और Registrar (Finance) दफ्तर में भी बहुत सी गड़बड़ियां हैं। वहां पर जो financial crisis है, उसमें सरकार को मदद करनी चाहिए।

मान्यवर, चूंकि एचआरडी मिनिस्टर बैठे हुए हैं, इसलिए मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहूंगा कि इतने बड़े institution को बचाने के लिए अगर उन्होंने कोई कार्रवाई की है, तो उससे इस सदन को अवगत कराएं, धन्यवाद।

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश)ः महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूं।

श्री आलोक तिवारी (उत्तर प्रदेश)ः महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूं।

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश)ः महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूं।

डा. चन्द्रपाल सिंह यादव (उत्तर प्रदेश)ः महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूं।

श्री रीताब्रता बनर्जी (पश्चिमी बंगाल)ः महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूं।

श्री सभापतिः मंत्री जी बाद में सदस्य को बुला कर थोड़ा बात करें। चूंकि यह यूनिवर्सिटी का मामला है, इसलिए आपस में ज्यादा चर्चा करने से फायदा होगा। Now, Shri La. Ganesan.